Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 8 | ISSUE : 9 | SEPTEMBER 2022

भारतीय नारियों के बढते कदम

डॉ. कुमारी अमृता [1]

[1] श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मेडिकल साइंस, सीहोर, मध्य प्रदेश.

ABSTRACT:

KEYWORDS:

भारत में सदियों तक आक्रांताओं का शिकार होता रहा जैसे मोहम्मद गौरी, मोहम्मद तुगलक आदि मुगल लुटेरों ने भारत पर आक्रमण कर यहां के हिरे–जेवरात, सोने–चांदी और बहुमुल्य चिजों को लुटा और यहां के मंदिरों को ध्वस्त कर दिया। इतना ही नहीं भारतीय नारियों के अस्मत से खिलवाड़ किया उनका अपहरण किया। भय से भारतीय नारियों ने अपने को जिंदा जला लिया। पति के मर जाने पर उसी चिता के साथ जल मरती । भय से घुंघट प्रथा, सती प्रथा का प्रचलन भारत में शुरू हुआ।

ब्रिटिश साम्राज्य में भी भारतीय नारियों के साथ शील हरण की घटनाएं आम बात थी। हमारे वीर बाँकुरो, वीर सपूतों ने बलिदानी पुत्रों ने ब्रिटिश साम्राज्य को खदेड़ा। 1947 में भारत आजाद हुआ। यहां के नेताओं ने भारत के विकास की पंचवर्षीय योजनाएं चलाई। इसी संदर्भ में नारियों के उत्थान के लिए नारी जागरण आंदोलन चला। विजयलक्ष्मी पण्डित, सरोजनी नायडू, कस्तुरबा गांधी, सावित्री बाई फूले, झांसी की रानी जैसी विरांगना महिलाओं ने अपना सबकुछ त्याग कर नारियों को आगे बढने में मदद की। धीरे–धीरे नारी सशक्तिकरण जोर पकड़ता गया । उमा भारती, वृंदा करात, रेखाअवस्थी, मायावती, ममता बनर्जी, रावड़ी देवी सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी पूर्व राष्ट्रपति स्मिता पाटिल पूर्व लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार, आदि महिलाओं ने राजनीति क्षत्र में अपनी–अपनी महत्वपूर्ण भूमिका दर्ज कराई । भारत के इतिहास में नारियों का जीवन वृत स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। सता से लेकर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों, प्रसासनिक महकमा, न्यायिक महकमा में इनकी स्मृति आने वाली पिढी के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनकर प्रकाशमान रहेगो। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने तो प्रधानमंत्री के रूप में भारत का कायाकल्प कर दिया। हरित क्रान्ति, स्वेत क्रान्ति और भारत की प्रगति के अनेक रास्ते खोले । कई क्षेत्रों में औद्योगिक और कृषि कारखाने खुले, भारत उसी समय खाद्यान के मामले में आत्मनिर्भर बना । पहले PL – 450 के अन्तर्गत अमेरिका से गेंहु का आयात होता था किन्तु आज तो भारत गेंहु और चावल का निर्यात कर रहा हैं। अकेला पंजाब में पुरूषों के साथ महिलाओं ने खेतो में साथ–साथ काम करना शुरू किया। पंजाब की महिलाओं ने दुनिया के सामने उदाहरण पेश किया कि महिलाओं के पास अदम्य साहस और शक्ति हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय महिलाओं की भूमिका सराहनीय हैं। अभी राष्ट्रमंडल के खेल में पी. वी. सिंधु, सुजाता, मिताली राज, सानिया मिर्जा, सानिया नेहवाल, हेमा दास आदि महिलाओं ने देश का नाम रोशन किया। इतिहास उन्हे संजोकर अपनी गोद में रखेगा और वर्तमान महिलओं को जागृति मिलेगी।

उसी तरह स्वास्थ्य के क्षेत्र में भारतीय महिलाए बढ़–चढ़कर आगे आ रही हैं। पैरामेडिकल जैसे नर्स, कम्प्यूटर आदि क्षेत्रों में आकर देश की सेवा कर रही हैं। जहां पर स्वास्थ्य सेवा की बात की जाए तो अधिकांश महिलाएं डॉक्टर बनकर देश की सेवा कर रही हैं। पुरूषों की तुलना में महिलाएं सर्जरी में भी आगे हैं। महिलाओं के स्वास्थय की देखरेख जच्चा–बच्चा की रक्षा करने में महिला डॉक्टर ज्यादा समर्थ हैं।

इसी तरह शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं का यागदान प्रशंसनीय हैं। कहा जाता है कि महिलाएं पढती है तो मायके और ससुराल दोनो कुल को शिक्षित करती हैं। सावित्री बाई फूले, कस्तुरबा गांधी जैसी महिलाओं ने कन्या विद्यालय खोलकर नारियों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया तथा आज अधिकांश स्कुलों में चाहे सरकारी हो या गैर सरकारी महिलाएं अपनी महत्ती पहचान बना ली। आज बिहार में ही नहीं अन्य राज्यों में बच्चीयों को पढ़ाने के लिए पुस्तक, पोशाक, साईकिल आदि मुहैया कराई जा रही हैं। यह नारी शक्ति का एक महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी कदम हैं। बेटी पढाओं से दहेज भगाओं का नारा दिया जा रहा है, किन्तु दुर्भाग्य देश का है कि पढ़ें लिखे परिवार दहेज की मांग करते हैं। आजकल प्रेम–विवाह के चलते दहेज प्रथा में कमी आती दिखाई दे रही हैं। महिलाएं पीएचडी करके कॉलेज और विश्वविद्यालय विभागाध्यक्ष, प्रोफेसरशीप आदि में महत्तो भूमिका का निर्वहन कर रही हैं।

मै डॉ. कुमारी अमृता जो हिन्दी विषय से पीएचडी किया अपने अगल बगल क्षेत्र और गांव घर में एक आदर्श के रूप में दिखाई देती हूँ। महिलाएं पत्रकारिता और लेखनकार्य में भी आगे आ रही हैं। मृणाल पाण्डे, कवयित्री अनामिका, सुभद्रा कुमारी चौहान, चन्द्रावती, डॉ. पुष्पा, डा. सागरिका राय इस क्षेत्र में महत्ती भूमिका निभा रही हैं।

इसी तरह प्रशासन के क्षेत्र में महिलाए देश का नाम उजागर कर रही हैं। बिहार के पंचायतो में महिलाओं के आरक्षण ने उन्हे जिवंत कर दिया और आज महिलाएं मुखिया, सरपंच, वार्ड पार्षद बनकर गौरवान्वित हो रही हैं। सीता साहु जो महिला हैं पटना का मेयर बनकर पटना नगर निगम को उँचाईयों पर ल जा रही हैं। किरण बेदी देश को पहली महिला आई पी एस. बनकर महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनी। इन्दिरा गांधी प्रथम भारतीय महिला प्रधानमंत्री बनी। ममता बनर्जी, मायावती, जयललिता, रंजिता रंजन, रावड़ी देवी, प्रियंका गांधी राजनीति में सिरमार हैं। प्रतिभा पाटिल पहली महिला राष्ट्रपति बनी। मीरा कुमार पहली महिला लोकसभा अध्यक्ष बनी। महामहिम द्रोपदी मूर्मू पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति बनकर महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनी। महिलाएं कभी भी पीछे नहीं रहेगी बशर्ते पितृसतात्मक समाज उन्हे प्रतिरोध न खड़ा करें। बहुत से आइ. ए. एस. और आई पी. एस. के सर्वोच्च पदों पर महिलाएं पदासीन होकर राष्ट्र की सेवा कर रही हैं।

इसी तरह से सैन्य सेवा में भारतीय महिलाएं बढ–चढ़कर काम कर रही हैं। महिलाए अर्द्धसैनिक बल सिपाही, दारोगा, एस.पी. बनकर महिला सशक्तिकरण को बल प्रदान कर रही हैं। महिलाएं जब गांधी मैदान में प्रशिक्षित होकर परेड करने लगती है तो भारत का मस्तक गर्व से उंचा हो जाता हैं। इसी तरह अंतरिक्ष, समुंद, खाद्यान, भूतल पर्यावरण आदि क्षेत्रों में भारतीय महिलाओं का योगदान सराहनीय और क्रांतिकारी हैं। इस तरह से भारतीय महिलाओं के सभी क्षेत्रों में बढ़ते कदम से राष्ट्र को काफी ताकत मिल रही हैं। जो सभी क्षेत्रों मे सराहनीय और क्रांतिकारी प्रतीत हो रहा हैं। इस तरह से महिलाएं हरेक क्षेत्र में अपना योगदान देकर राष्ट्र को आगे ले जाने का काम कर रही हैं। महिलाओं की उपेक्षा हमारे राष्ट्र के बढ़ते कदम में रूकावट पैदा कर सकता हैं। महिलाओं का क्रांतिकारी परिवर्तन शिक्षा के बदौलत ही भारत में सम्भव हुआ हैं।

डॉ. कुमारी अमृता

श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मेडिकल साइंस, सीहोर, मध्य प्रदेश.

REFERENCES

No reference, since the present article is an outcome of Creative Writing